राजस्थान की शैली

माड

(उद्‌गम एवं विकास)

पं. लक्ष्मण प्रसाद

बाबा बिहारी कथक

पद्मश्री अल्लाह जिलाई बाई

पं. घिरंजीलाल तँवर

पं. शिवराम डांगी

डॉ. हनुमान सहाय

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

॥ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ॥

विषय–सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृ.सं.
1.	**राजस्थान का इतिहास**	1–24

राजस्थान का नामकरण :

- राजस्थान की ऐतिहासिक व राजनैतिक परिस्थितियाँ
- ऐतिहासिक अंश

राजस्थान का संगीत

- राजस्थान के राजघरानों में संगीत व साहित्य की खुशबू
- माड में लोक व नीतिगत अंश
- शब्द गूंजते हैं

राजस्थान में 'माड' का स्थान

- माड का लोक समागम
- माड के साहित्य में नीतिगत समागम
- राजघरानों में स्वर व साहित्य का आंतरिक मर्म

राग माड में झलकता अध्यात्म

- कविता में माड का लक्षण
- राजपूत कालीन संगीत की दशा
- आध्यात्मिक व सांस्कृतिक परम्परा

2.	**माड द्वारा मानवीकरण**	25–48

माड का शब्द व स्वर द्वारा मन पर प्रभाव

- राग माड में नादात्मकता
- जातियों का संगीत से सम्बन्ध
- राज परिवारों द्वारा माड को मिला संरक्षण

राग माड का अवमूलन

- राग माड की सांगीतिक अक्षुण्णता
- न्याय के लिए प्रतीक्षारत 'राग माड'
- हिन्दुस्तान की सांस्कृतिक सभ्यता
- संगीत का भ्रमित स्तर

भ्रांतियों को मिटाने की क्रान्ति

- संगीत के विषयगत बदलाव की जरूरत
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में माड की सत्ता

- पहचान के मायने
- लड़ना होगा सांगीतिक भ्रष्टाचार से

संगीत एवं साहित्य एक अविभाज्य पहलू

- संगीत व साहित्य से मानसिक प्रभाव
- संगीत में सौंदर्य
- शब्दों से ज्ञानार्जन
- संगीत व साहित्य में भेदाभेद

3. **माड का लोक समागम** 49—79

- लोक का अर्थ
- लोक संगीत की व्यापकता
- लोकोत्तर काव्य का आनंद

गेय काव्य द्वारा प्रभावात्मकता

- चित्तानुरंजन एवं सामाजिक समरसता
- काव्य में भाषाई व्यापकता
- लोक के पंच परमेश्वर

माड की डाँवाडोल परिस्थिति

- माड में वर्णित शब्दों द्वारा मानसिक बदलाव
- माड का प्रभावपूर्ण अस्तित्व
- संगीत व प्रेम सहोदर

माड में रससिक्त अभिव्यक्ति

- राग माड में नवरसों की छाया
- गेय रचनाओं की व्याख्या
- स्वरलिपि सहित

4. **माड का शास्त्रीय विमर्श** 80—122

- राग माड एक रहस्य
- सांगीतिक जागरूकता
- ध्रुवपद एवं माड में समानता
- माड व राग माड में अन्तर

माड के स्वरूप में संशयात्मक दृष्टि

- राजस्थान का माड भँवरजाल में
- भारत में फैला माड का भ्रमिक स्वरूप
- माड की आड़ में प्रतिष्ठा की अभिलाषा

लोक सम्मत व शास्त्र सम्मत राग माड

- मानसिक सोच में बदलाव की आवश्यकता
- दो थाटों में गाया जाता है राग माड
- राजमहल से लेकर कोटड़ी में सुरक्षित माड
- माड की वास्तविकता

राजस्थानी गीतों को दिया माड का दर्जा

- प्रथम सोपान
- थाट खमाज पर आधारित राग माड
- थाट बिलावल पर आधारित राग माड

राग माड का वास्तविक स्वरूप

- **स्वरचित रचनाएं**

- **सन्दर्भ सूची** 123–126

❑❑❑